ShodhVichar: Journal of Media and Mass Communication
January-June 2026 2(1)
https://shodhvichar.com/

Original Article

VALUE-BASED JOURNALISM IN WARTIME SITUATIONS

युद्धकाल में मूल्य-आधारित पत्रकारिता

Dr. Anita Janjani [1*]
[1] An Educationist and Media Professional, India

ABSTRACT

English: Wartime situations represent highly sensitive and challenging periods for any nation. During such times, the role of journalism extends beyond merely disseminating information; it also contributes significantly to shaping public opinion, fostering social cohesion, safeguarding democratic values, and promoting peace.

In the contemporary digital era, the rapid dissemination of information, the growing influence of social media, and the emergence of artificial intelligence–generated content have created new challenges for journalism. Consequently, maintaining a balance between nationalism, national security, confidentiality, and public interest during wartime has become an increasingly complex task for media professionals.

In this context, value-based journalism operates by placing core principles such as truth, objectivity, accountability, humanity, and ethical responsibility at the canter of journalistic practice. During times of crisis, value-oriented journalism can serve as an effective response to the prevailing crisis of values and ideological polarization in society. This research paper examines the necessity of value-based journalism in wartime situations, the challenges it encounters, and its broader social responsibilities.

Hindi: युद्धकालीन परिस्थितियाँ किसी भी राष्ट्र के लिए अत्यंत संवेदनशील और चुनौतीपूर्ण समय होती हैं। ऐसे समय में पत्रकारिता की भूमिका केवल सूचना प्रदान करने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह जनमत निर्माण, सामाजिक एकता, लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा तथा शांति स्थापना में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है।

वर्तमान डिजिटल युग में सूचना का तीव्र प्रसार, सोशल मीडिया का बढ़ता प्रभाव तथा कृत्रिम-बुद्धिमत्ता आधारित सामग्री निर्माण ने पत्रकारिता के समक्ष नई चुनौतियाँ उत्पन्न कर दी हैं अतएव युद्धकाल में राष्ट्रवाद, सुरक्षा, गोपनीयता और जनहित के बीच संतुलन बनाए रखना पत्रकारिता के लिए एक जटिल कार्य हो गया है। इस संदर्भ में मूल्य-आधारित पत्रकारिता- सत्य, निष्पक्षता, उत्तरदायित्व, मानवता और नैतिकता जैसे मूल्यों को केंद्र में रखकर कार्य करती है। संकटकाल में मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता का स्वरुप वर्तमान वैचारिक प्रदूषण से भरे मूल्य संकट का एक प्रभावी समाधान हो सकता है। यह शोधपत्र युद्धकालीन परिस्थितियों में मूल्य-आधारित पत्रकारिता की आवश्यकता, उसके समक्ष उपस्थित चुनौतियां तथा उसके सामाजिक दायित्वों का विश्लेषण करता है।

Keywords: Value-Based Journalism, Wartime Journalism, Media Ethics, Democracy, Nationalism, Public Interest, Fake News, मूल्य-आधारित पत्रकारिता, युद्धकाल, नैतिकता, मीडिया, लोकतंत्र, राष्ट्रवाद, फेक न्यूज़

*Corresponding Author:
Email address: Dr. Anita Janjani (dranitajanjani@gmail.com)

Received: 16 April 2026; **Accepted:** 23 May 2026; **Published** 05 June 2026
DOI: 10.29121/ShodhVichar.v2.i1.2026.100
Page Number: 149-154
Journal Title: ShodhVichar: Journal of Media and Mass Communication
Journal Abbreviation: ShodhVichar J. Media & Mass Commun.
Online ISSN: 3107-6408, **Print ISSN:** 3108-270X
Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India
Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.
Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.
Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.
Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.
Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

प्रस्तावना

पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। इसका प्रमुख उद्देश्य जनता को सत्य, निष्पक्ष और विश्वसनीय सूचना उपलब्ध कराना है, किंतु संकटकालीन परिस्थितियों में पत्रकारिता की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण तथा जटिल हो जाती है। चूंकि युद्ध केवल सैन्य संघर्ष नहीं होता, बल्कि यह सूचना, विचारधारा और मनोवैज्ञानिक प्रभावों का भी संघर्ष होता है, इसलिए मीडिया का दायित्व केवल घटनाओं का वर्णन करना नहीं, बल्कि तथ्यों की सत्यता सुनिश्चित करना, अफवाहों को रोकना तथा समाज में संतुलित दृष्टिकोण विकसित करना भी होता है।

मूल्य-आधारित पत्रकारिता, पत्रकारिता के उन सिद्धांतों पर आधारित है जो सत्य, निष्पक्षता, मानवाधिकार, सामाजिक-उत्तरदायित्व और नैतिक-आचरण को सर्वोच्च महत्व देते हैं। युद्धकाल में जब राष्ट्रवाद की भावना प्रबल होती है और सूचना को रणनीतिक हथियार के रूप में प्रयोग किया जाता है, तब मूल्य-आधारित पत्रकारिता की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है।

मूल्य-आधारित पत्रकारिता की अवधारणा

मूल्य-आधारित पत्रकारिता, वह है जो समाचारों के चयन, प्रस्तुति और विश्लेषण में नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता देती है। इसके प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं—

1) सत्यनिष्ठा (Truthfulness)
2) निष्पक्षता (Objectivity)
3) उत्तरदायित्व (Accountability)
4) पारदर्शिता (Transparency)
5) मानवीय संवेदनशीलता (Human Sensitivity)
6) लोकहित (Public Interest)

मूल्य-आधारित पत्रकारिता का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं बल्कि लोकतांत्रिक चेतना को सुदृढ़ करना भी है।

युद्धकालीन पत्रकारिता की प्रकृति

युद्धकाल में सूचना का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है। सैन्य गतिविधियाँ, राजनीतिक निर्णय, अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रियाएँ तथा मानवीय संकट सभी मीडिया कवरेज का हिस्सा बनते हैं, ऐसे संकटकाल में मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता का स्वरुप वर्तमान वैचारिक प्रदूषण से भरे मूल्य संकट का एक प्रभावी समाधान हो सकता है।

युद्धकालीन पत्रकारिता की प्रमुख विशेषताएँ

युद्धकालीन पत्रकारिता सामान्य परिस्थितियों की पत्रकारिता से कई मायनों में भिन्न होती है। युद्ध के समय मीडिया केवल सूचना का माध्यम नहीं रह जाता, बल्कि वह राष्ट्रीय सुरक्षा, जनमत निर्माण, अंतरराष्ट्रीय कूटनीति तथा मनोवैज्ञानिक प्रभावों का भी महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है। निम्नलिखित विशेषताएँ युद्धकालीन पत्रकारिता की प्रकृति को स्पष्ट करती हैं—

त्वरित समाचार प्रसारण (RAPID NEWS DISSEMINATION)

युद्धकाल में घटनाएँ अत्यंत तीव्र गति से घटित होती हैं। सैन्य अभियान, हवाई हमले, सीमा संघर्ष, राजनीतिक निर्णय और अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रियाएँ लगातार बदलती रहती हैं। ऐसे में मीडिया पर शीघ्रता से समाचार प्रसारित करने का दबाव होता है।

आधुनिक तकनीकों, उपग्रह संचार, इंटरनेट और सोशल मीडिया के कारण अब युद्ध क्षेत्र से वास्तविक समय (Real-Time) में सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। दर्शक और पाठक तुरंत जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। हालांकि इस तीव्रता के कारण तथ्य-जांच (Fact-Checking) की प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है और अपुष्ट सूचनाएँ प्रसारित होने का जोखिम बढ़ जाता है। इसलिए युद्धकालीन पत्रकारिता में गति और सत्यता के बीच संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक होता है।

राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी संवेदनशील सूचनाएँ

युद्ध के दौरान कई सूचनाएँ राष्ट्रीय सुरक्षा से सीधे जुड़ी होती हैं। सेना की रणनीति, सैनिकों की तैनाती, सैन्य उपकरणों की स्थिति तथा गोपनीय अभियानों से संबंधित जानकारी यदि समय से पहले सार्वजनिक हो जाए तो इससे राष्ट्रीय हितों को गंभीर नुकसान पहुँच सकता है।

इस कारण पत्रकारों को रिपोर्टिंग करते समय विशेष सावधानी बरतनी पड़ती है। उन्हें यह समझना होता है कि कौन-सी सूचना जनहित में है और कौन-सी सूचना शत्रु पक्ष को लाभ पहुँचा सकती है। मूल्य-आधारित पत्रकारिता राष्ट्रीय सुरक्षा और जनता के सूचना के अधिकार के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है।

मनोवैज्ञानिक युद्ध का प्रभाव (PSYCHOLOGICAL WARFARE)

आधुनिक युद्ध केवल हथियारों से नहीं लड़े जाते, बल्कि मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी संघर्ष चलता है। युद्धरत पक्ष अपने नागरिकों, सैनिकों और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के मनोबल को प्रभावित करने के लिए मीडिया का उपयोग करते हैं।

मनोवैज्ञानिक युद्ध के अंतर्गत विजय, शक्ति और सफलता की छवि प्रस्तुत की जाती है, जबकि विरोधी पक्ष की कमजोरियों को उजागर किया जाता है। कई बार भावनात्मक समाचार, दृश्य सामग्री और राष्ट्रवादी संदेशों के माध्यम से जनता की सोच को प्रभावित करने का प्रयास किया जाता है। ऐसे समय में पत्रकारिता की जिम्मेदारी है कि वह तथ्यों पर आधारित और संतुलित जानकारी प्रस्तुत करे।

प्रचार (PROPAGANDA) और प्रतिप्रचार (COUNTER-PROPAGANDA)

युद्धकाल में सूचना एक रणनीतिक हथियार बन जाती है। सरकारें, सैन्य संगठन और अन्य हितधारक अपने पक्ष को मजबूत दिखाने तथा विरोधी पक्ष की छवि कमजोर करने के लिए प्रचार का सहारा लेते हैं। प्रचार का उद्देश्य जनमत को प्रभावित करना और युद्ध के प्रति समर्थन प्राप्त करना होता है। इसके विपरीत, प्रतिप्रचार विरोधी पक्ष द्वारा फैलाए गए संदेशों का खंडन करने और अपनी स्थिति स्पष्ट करने का प्रयास करता है।

सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म के विस्तार के कारण प्रचार और प्रतिप्रचार की गतिविधियाँ पहले की तुलना में अधिक व्यापक और प्रभावशाली हो गई हैं। इस स्थिति में पत्रकारों के लिए तथ्यात्मक और निष्पक्ष रिपोर्टिंग करना एक बड़ी चुनौती बन गया है।

जनमत निर्माण (PUBLIC OPINION FORMATION)

युद्धकाल में मीडिया जनता के विचारों, भावनाओं और दृष्टिकोण को प्रभावित करने की महत्वपूर्ण क्षमता रखता है। समाचारों की प्रस्तुति, भाषा का चयन, चित्रों और वीडियो का उपयोग तथा विशेषज्ञों की टिप्पणियाँ जनता की सोच को दिशा देती हैं।

यदि मीडिया किसी घटना को अत्यधिक भावनात्मक रूप में प्रस्तुत करता है, तो जनता की प्रतिक्रिया भी उसी प्रकार प्रभावित हो सकती है। दूसरी ओर, संतुलित और तथ्यपरक रिपोर्टिंग नागरिकों को विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सहायता करती है। इसलिए युद्धकालीन पत्रकारिता में जनमत निर्माण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

अंतरराष्ट्रीय मीडिया प्रतिस्पर्धा (INTERNATIONAL MEDIA COMPETITION)

वैश्वीकरण और डिजिटल संचार के युग में युद्ध की घटनाएँ केवल स्थानीय या राष्ट्रीय मुद्दा नहीं रहतीं, बल्कि वैश्विक चर्चा का विषय बन जाती हैं। विभिन्न देशों के समाचार संस्थान युद्ध की घटनाओं को अपने-अपने दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते हैं।

अंतरराष्ट्रीय मीडिया संस्थानों के बीच सबसे पहले और सबसे प्रभावशाली समाचार प्रस्तुत करने की प्रतिस्पर्धा रहती है। कई बार राजनीतिक, सांस्कृतिक और वैचारिक दृष्टिकोण भी समाचार कवरेज को प्रभावित करते हैं। परिणामस्वरूप एक ही घटना की विभिन्न व्याख्याएँ सामने आ सकती हैं।

इस परिस्थिति में मूल्य-आधारित पत्रकारिता का महत्व और बढ़ जाता है, क्योंकि यह तथ्यों, निष्पक्षता और नैतिकता को प्राथमिकता देकर समाचारों की विश्वसनीयता बनाए रखने का प्रयास करती है।

अतः युद्धकालीन पत्रकारिता की ये विशेषताएँ दर्शाती हैं कि युद्ध केवल सैन्य संघर्ष नहीं, बल्कि सूचना और संचार का भी संघर्ष होता है। त्वरित समाचार प्रसारण, राष्ट्रीय सुरक्षा, मनोवैज्ञानिक प्रभाव, प्रचार-प्रतिप्रचार, जनमत निर्माण तथा अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा जैसे तत्व पत्रकारिता को अत्यंत जटिल बना देते हैं। ऐसे समय में मूल्य-आधारित पत्रकारिता ही सत्य, निष्पक्षता और सामाजिक उत्तरदायित्व को बनाए रखते हुए लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा कर सकती है।

युद्धकाल में मीडिया केवल सूचना का माध्यम नहीं रह जाता बल्कि वह रणनीतिक प्रभाव का साधन भी बन सकता है।

युद्धकाल में मूल्य-आधारित पत्रकारिता की आवश्यकता

सत्य और तथ्यपरकता की रक्षा

युद्ध के दौरान अफवाहें और भ्रामक सूचनाएँ तेजी से फैलती हैं। यदि मीडिया बिना सत्यापन के समाचार प्रसारित करे तो सामाजिक अशांति और भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

मूल्य-आधारित पत्रकारिता तथ्यों की पुष्टि के बाद ही समाचार प्रस्तुत करने पर बल देती है। इससे जनता को विश्वसनीय जानकारी प्राप्त होती है।

लोकतांत्रिक मूल्यों का संरक्षण

युद्धकाल में सरकारें कई बार सुरक्षा कारणों से सूचना पर नियंत्रण स्थापित करती हैं। ऐसे समय में मीडिया को राष्ट्रीय सुरक्षा और नागरिक अधिकारों के बीच संतुलन बनाए रखना पड़ता है।

मूल्य-आधारित पत्रकारिता लोकतांत्रिक सिद्धांतों की रक्षा करते हुए उत्तरदायी रिपोर्टिंग सुनिश्चित करती है।

मानवाधिकारों की रक्षा

युद्ध का सबसे अधिक प्रभाव आम नागरिकों पर पड़ता है। विस्थापन, मृत्यु, भूख और मानसिक आघात जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

मूल्य-आधारित पत्रकारिता युद्ध की मानवीय लागत को उजागर करती है और पीड़ितों की आवाज़ समाज तक पहुँचाती है।

शांति और संवाद को बढ़ावा

पत्रकारिता का उद्देश्य केवल संघर्ष का चित्रण करना नहीं, बल्कि समाधान और संवाद की संभावनाओं को भी सामने लाना है। शांति पत्रकारिता इसी दृष्टिकोण को आगे बढ़ाती है।

युद्धकालीन परिस्थितियों में पत्रकारिता की चुनौतियाँ

सरकारी नियंत्रण और सेंसरशिप

युद्ध के दौरान सरकारें सुरक्षा कारणों से मीडिया पर प्रतिबंध लगा सकती हैं। इससे स्वतंत्र रिपोर्टिंग प्रभावित होती है।

फेक न्यूज़ और दुष्प्रचार

सोशल मीडिया के युग में झूठी खबरें अत्यंत तेजी से फैलती हैं। कई बार शत्रु राष्ट्र भी सूचना युद्ध के माध्यम से भ्रम फैलाने का प्रयास करते हैं।

पत्रकारों की सुरक्षा

युद्ध क्षेत्र में कार्यरत पत्रकारों को शारीरिक जोखिम, अपहरण और हिंसा जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

राष्ट्रवाद और निष्पक्षता का संतुलन

युद्धकाल में मीडिया पर राष्ट्रवादी भावनाओं के अनुरूप रिपोर्टिंग का दबाव बढ़ जाता है। ऐसी स्थिति में निष्पक्षता बनाए रखना कठिन हो सकता है।

टीआरपी और व्यावसायिक दबाव

कई समाचार संस्थान युद्ध संबंधी सनसनीखेज प्रस्तुतियों के माध्यम से दर्शकों को आकर्षित करने का प्रयास करते हैं, जिससे पत्रकारिता के मूल मूल्य प्रभावित होते हैं।

भारतीय परिप्रेक्ष्य

भारत में विभिन्न युद्धों और सैन्य अभियानों के दौरान मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

कारगिल युद्ध (1999)

कारगिल युद्ध को भारत का पहला "टेलीविजन युद्ध" कहा जाता है। इस युद्ध के दौरान मीडिया ने जनता तक युद्ध की वास्तविक स्थिति पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालांकि कुछ विशेषज्ञों ने इसे अत्यधिक राष्ट्रवादी प्रस्तुति का उदाहरण भी माना।

पुलवामा और बालाकोट (2019)

पुलवामा आतंकी हमले और बालाकोट एयर स्ट्राइक के दौरान सोशल मीडिया और टीवी चैनलों पर कई अपुष्ट सूचनाएँ प्रसारित हुईं। **इस घटना ने तथ्य-जांच और मूल्य-आधारित पत्रकारिता की आवश्यकता को पुनः रेखांकित किया।**

ऑपरेशन सिंदूर (2025)

हाल के सैन्य अभियानों के दौरान डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर सूचना की तीव्र गति ने मीडिया के लिए तथ्य-जांच और जिम्मेदार रिपोर्टिंग को और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया।

युद्ध और शांति पत्रकारिता

नॉर्वेजियन विद्वान Johan Galtung ने शांति पत्रकारिता की अवधारणा प्रस्तुत की। इसके अनुसार पत्रकारिता को केवल हिंसा और संघर्ष पर केंद्रित न होकर शांति, संवाद और समाधान की संभावनाओं को भी सामने लाना चाहिए।

शांति पत्रकारिता की प्रमुख विशेषताएँ हैं—

- संघर्ष के मूल कारणों का विश्लेषण
- सभी पक्षों की आवाज़ को स्थान देना
- मानवीय पीड़ा पर ध्यान केंद्रित करना
- समाधान-उन्मुख दृष्टिकोण अपनाना

युद्धकालीन परिस्थितियों में मूल्य-आधारित पत्रकारिता और शांति पत्रकारिता एक-दूसरे के पूरक कहे जा सकते हैं।

डिजिटल युग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की चुनौतियाँ

आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और सोशल मीडिया ने पत्रकारिता की प्रकृति को और अधिक बदल दिया है।

डीपफेक और गलत सूचना

AI तकनीक के माध्यम से नकली वीडियो और चित्र तैयार किए जा सकते हैं, जो युद्धकाल में भ्रम फैलाने का माध्यम बन सकते हैं।

एल्गोरिदमिक पक्षपात

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म अक्सर ऐसी सामग्री को प्राथमिकता देते हैं जो अधिक प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करती है। इससे सनसनीखेज समाचारों का प्रसार बढ़ सकता है।

तथ्य-जांच की आवश्यकता

डिजिटल युग में पत्रकारों को तकनीकी उपकरणों और तथ्य-जांच प्रणालियों का उपयोग करना आवश्यक हो गया है।

मूल्य-आधारित पत्रकारिता के लिए सुझाव

आज हम मूल्य संकट के विषम दौर से गुज़र रहें हैं। जीवन एंव समाज का हर क्षेत्र नैतिक पतन एंव अवमूल्यन की गिरफ्त में है। लोकतंत्र का हर स्तंभ लड़खड़ा रहा है, ऐसे संकटकाल में नितांत आवश्यक है कि-

1) समाचारों का बहु-स्रोत सत्यापन किया जाए।
2) फेक न्यूज़ के विरुद्ध सशक्त तथ्य-जांच तंत्र विकसित किया जाए।
3) युद्ध क्षेत्र में पत्रकारों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए।
4) मीडिया संस्थानों में नैतिक पत्रकारिता प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया जाए।
5) शांति और मानवाधिकार आधारित रिपोर्टिंग को प्रोत्साहित किया जाए।
6) कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग के लिए स्पष्ट नैतिक दिशानिर्देश बनाए जाएँ।
7) टीआरपी आधारित सनसनीखेज़ी से बचा जाए।

निष्कर्षत

संकटकालीन परिस्थितियों में पत्रकारिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। ऐसे समय में मीडिया केवल सूचना का माध्यम नहीं बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवता का संरक्षक भी होता है।

मूल्य-आधारित पत्रकारिता सत्य, निष्पक्षता, संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व के माध्यम से संकटकालीन चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाती है। वर्तमान डिजिटल युग में, जब फेक न्यूज़, दुष्प्रचार और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सूचना-हेरफेर बढ़ रहे हैं, तब मूल्य-आधारित पत्रकारिता की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। अतएव पत्रकारिता को व्यावसायिक हितों से ऊपर उठकर लोकतंत्र, मानवता और सत्य की सेवा के प्रति प्रतिबद्ध रहना चाहिए।

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Christians, C. G., Glasser, T. L., McQuail, D., Nordenstreng, K., and White, R. A. (2009). Normative Theories of the Media: Journalism in Democratic Societies. University of Illinois Press.

Galtung, J. (2002). Peace Journalism: A Challenge. In W. Kempf and H. Luostarinen (Eds.), Journalism and the New World Order (259–272). Nordicom.

Kovach, B., and Rosenstiel, T. (2021). The Elements of Journalism (4th ed.). Crown.

McQuail, D. (2010). McQuail's Mass Communication Theory (6th ed.). Sage Publications.

Merrill, J. C. (1997). Journalistic Ethics: Philosophical Foundations for News Media. St. Martin's Press.

Nayyar, K. (2019). Media Ethics and Conflict Reporting in India. Journal of Media Studies, 12(2), 45–58.
Plaisance, P. L. (2014). Media Ethics: Key Principles for Responsible Practice (2nd ed.). Sage Publications. https://doi.org/10.4135/9781544308517
Ward, S. J. A. (2015). The Invention of Journalism Ethics (2nd ed.). McGill-Queen's University Press. https://doi.org/10.1515/9780773598065
Wolfsfeld, G. (2004). Media and the Path to Peace. Cambridge University Press. https://doi.org/10.1017/CBO9780511489105
Zelizer, B., and Allan, S. (2011). Journalism After September 11. Routledge. https://doi.org/10.4324/9780203818961